आदमी जिसने अपने आपको परमेश्वर समझा था (12:1-3, 18-23)

एक दिन, जब राजा नबूकदनेस्सर अपने शाही महल की छत पर टहल रहा था, तो उसे विचार आया, ''क्या यह वही बड़ा बाबुल नहीं है, जिसे मैंने ही अपने बल और सामर्थ से राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बड़ाई के लिए बसाया है?'' (दानिय्येल 4:30)। उसके ये बातें कहते ही, आकाश से एक आवाज़ आई:

> हे राजा नबूकदनेस्सर ... राज्य तेरे हाथ से निकल गया, और तू मनुष्यों के बीच से निकाला जाएगा, और मैदान के पशुओं के संग रहेगा; और बैलों की नाईं घास चरेगा; ... जब तक कि तू न जान ले कि परमप्रधान, मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहे वह उसे दे देता है (दानिय्येल 4:31, 32)।

उसी समय, वह एक बीमारी की चपेट में आ गया और जानवरों जैसा व्यवहार करने लगा।[1] वह खेत में, शायद महल के बाग में गया ''और बैलों की नाईं घास चरने लगा, और उसकी देह आकाश की ओस से भीगती थी, यहां तक कि उसके बाल उक़ाब पक्षियों के परों से और उसके नाखून चिड़ियों के चंगुलों के समान बढ़ गए'' (दानिय्येल 4:33)।

जब राजा की बुद्धि लौट आई, तो उसने माना कि उसकी सफलता के लिए यहोवा ज़िम्मेदार था: ''अब मैं नबूकदनेस्सर स्वर्ग के राजा को सराहता हूं, और उसकी स्तुति और महिमा करता हूं क्योंकि उसके सब काम सच्चे, और उसके सब व्यवहार न्याय के हैं; और जो लोग घमण्ड से चलते हैं, उन्हें वह नीचा कर सकता है'' (दानिय्येल 4:37)। ''जो लोग घमण्ड से चलते हैं, उन्हें वह नीचा कर सकता है'' शब्दों को रेखांकित कर लें। इस पाठ में हम उस वाक्य की सच्चाई के प्रमाण की सामर्थ को देखेंगे।

नये नियम में नबूकदनेस्सर की प्रतिमूर्ति हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम है। यह वह हेरोदेस है जिसने प्रेरित याकूब को कत्ल करवाया था, जिसने पतरस को गिरफ्तार करवाया और उसको मरवाना चाहता था। अध्ययन करते हुए, हम देखेंगे कि किस प्रकार हेरोदेस ने ''देवता'' की उपाधि स्वीकार की, और कैसे प्रभु ने उसे नीचा किया।

हेरोदेस का परिवार

हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम को समझने के लिए, हमारे लिए उसकी पृष्ठभूमि को देखना आवश्यक है। यह, वह ''आदमी था जो सोचता था कि वह परमेश्वर है'' क्योंकि वह उस *परिवार* से था जिसके सदस्य अपने आपको देवता मानते थे।[2] उसके परिवार के लोगों अर्थात हेरोदेस के परिवार के लोगों के जीवनों और ऐश्वर्य से बार-बार यीशु और उसके आरम्भिक चेलों के जीवनों पर वार हुआ था।

हेरोदेसी परिवार के कम से कम ग्यारह लोगों का उल्लेख नये नियम में है, जिनमें से दस का तो नाम भी दिया गया है। उन्हें अपने मन में उतारने के लिए, आपके लिए यह समझना आवश्यक है कि पदनाम ''हेरोदेस'' नाम की तरह ही एक ओहदा बन चुका था। कइयों को ''हेरोदेस'' कहा जाता है, जो कि उस परिवार को न जानने वालों के लिए उलझन भरा हो सकता है। सदस्यों को एक तरफ करने और हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम को अच्छी तरह समझने के लिए, आइए उसके परिवार के वृक्ष (फैमिली ट्री) की कुछ चुनिन्दा शाखाओं को देखें:[3] हमारा सर्वेक्षण हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम के दादा, हेरोदेस महान से आरम्भ होता है। हेरोदेस महान (जिसे शास्त्र में केवल ''हेरोदेस'' कहा गया है; देखिए लूका 1:5) को उस हेरोदेस के रूप में अच्छी तरह जाना जाता है जिसने यीशु के जन्म के समय बच्चों को मरवाया था (मत्ती 2:1-19)। वह एक एदोमी था,[4] जो कि एसाव का वंश था। आरम्भ में, यहूदी स्वतन्त्रता सेनानियों ने जिन्हें मकाबी कहा जाता था, एदोमियों को हराया था,[5] और एदोमी पुरुषों का बलपूर्वक खतना किया गया था। एदोमी लोगों के यहूदी या यहूदी मत धारण करने वाले कहलाने की केवल कल्पना ही की जा सकती थी। तथापि, हेरोदेस ने यहूदी धर्म में शादी भी की; उसकी दस शादियों में से एक मरियम्ने नाम की यहूदिन से हुई थी, जो मकाबी शूरवीरों के वंश की राजकुमारी थी।

छोटी उम्र में ही, हेरोदेस महान गलील का राज्यपाल बन गया। धीरे-धीरे, उसे बड़े क्षेत्र की ज़िम्मेदारी के साथ राजा का ओहदा भी दिया गया। एक हेरोदेसी दल को छोड़कर जो आंशिक धार्मिक और आंशिक राजनीतिक था वह सभी यहूदियों में प्रसिद्ध नहीं था (मत्ती 22:16; मरकुस 3:6; 12:13)।

हेरोदेस भवन निर्माण के प्रति अपनी धुन के लिए प्रसिद्ध है,[6] यरूशलेम में मन्दिर का पुनर्निर्माण उसकी महानतम उपलब्धियों में से है।[7] उसे अपने राजनीतिक शत्रुओं के भय के लिए भी जाना जाता है।[8] मकाबी परिवार की निरन्तर प्रसिद्धि के भय से, उसने योजनापूर्वक उनका सर्वनाश किया, जिसमें मरियम्ने के दो पुत्र भी शामिल थे। (जो आदमी अपने दो पुत्रों को मरवा सकता है, तो हमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि वह दूसरों के पुत्रों को भी मरवा सकता है!) अन्ततः, उसने मरियम्ने की भी हत्या कर दी, सम्भवतः यह अकेली पत्नी थी जो उससे प्रेम करती थी।

हेरोदेस महान ने लगभग 37 वर्ष तक शासन किया, अन्त में एक घृणित और असाध्य रोग से उसकी मृत्यु हो गई (मत्ती 2:19, 20 में उसकी मृत्यु का उल्लेख है)। उसकी मृत्यु के बाद, रोम ने उसके इलाके को चार भागों में बांट दिया और हर एक पर एक हाकिम

(''एक चौथाई का हाकिम'') नियुक्त किया जिसे ''टेट्राक'' कहा जाता था।[9] हेरोदेस महान के तीन पुत्रों (हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम के चाचाओं) में से हर एक को एक भाग मिला, और एक चौथाई लिसानियास नाम के एक गैर-यहूदी को दे दिया गया था (लूका 3:1)।

एक पुत्र, अरखिलायुस को, यहूदिया, सामरिया, एदुमिया (एदोम) पर हाकिम बना दिया गया। वह अपने प्रचण्ड क्रोध के लिए प्रसिद्ध था। अरखिलायुस के भय से, यूसुफ, मरियम, और यीशु बैतलहम को नहीं लौटे थे, क्योंकि वह अरखिलायुस के क्षेत्र में था, परन्तु वे गलील में नासरत को चले गए थे (मत्ती 2:19-23)। यहूदियों को दण्ड देने के लिए क्रूरता का उपयोग करने के कारण अरखिलायुस को 6 ई. में गाउल में देश निकाला दे दिया गया। रोम ने उस इलाके पर कई राज्यपाल नियुक्त किए (जिनमें से पांचवां पुन्तियुस पीलातुस था; लूका 3:1)।

एक और पुत्र, हेरोदेस अन्तिपास (जिसे शास्त्र में केवल ''हेरोदेस'' के नाम से जाना जाता है; लूका 8:3) गलील पिरिया पर हाकिम (टेट्राक) बन गया (मत्ती 14:1; लूका 3:1, 19; 9:7; प्रेरितों 13:1 भी देखिए)। वह हेरोदेसों में से सबसे प्रसिद्ध है क्योंकि वह यीशु की व्यक्तिगत सेवकाई के दौरान शासन करता था (वह गलील में राज्य करता था, जहां यीशु ने सबसे अधिक काम किया)। शास्त्र में इस हेरोदेस को लोमड़ी (लूका 13:31, 32), अन्धविश्वासी (मत्ती 14:1, 2; लूका 9:7-9 भी देखिए), और देश पर चरित्रहीन प्रभाव डालने वाला (मरकुस 8:15) कहा गया है। काम में अन्धे, हेरोदेस अन्तिपास ने एक भतीजी हेरोदियास[10] और अपने सौतेले भाई हेरोदेस फिलिप्पुस प्रथम की पत्नी को पाने के लिए, एक पत्नी[11] को निकाल दिया। जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने उसके पाप के लिए उसे उलाहना दिया, तो प्रचारक को अपना सिर गंवाना पड़ा (मत्ती 14:1-12; मरकुस 6:14-29)। बाद में, जब यीशु पर मुकदमा चला, तो पीलातुस ने हेरोदेस अन्तिपास को उसके पास भेजा, और राजा ने अपने आदमियों को यीशु के साथ अपमानपूर्वक व्यवहार करने की अनुमति दे दी (लूका 23:7-12,15; प्रेरितों 4:27 भी देखिए)। हेरोदेस अन्तिपास पर अन्त में राजद्रोह का आरोप लगा और उसे गाउल में देश निकाला दे दिया गया, जहां वह बड़ी दुर्दशा में मरा।

हेरोदेस महान के तीसरे पुत्र, हेरोदेस फिलिप्पुस द्वितीय को, इतुरिया तथा त्रखोनितिस पर हाकिम बनाया गया था।[12] वह लूका 3:1 में उल्लेखित ''फिलिप्पुस'' है और वह दूसरे हेरोदेसों के जैसा बुरा नहीं था।[13] हेरोदेस महान का एक और पुत्र था जिसका नाम फिलिप्पुस था। दूसरे फिलिप्पुस (''हेरोदेस फिलिप्पुस प्रथम'')को नये नियम में केवल ''फिलिप्पुस'' भी कहा गया है। वह हेरोदियास का पहला पति (मत्ती 14:3; मरकुस 6:17; लूका 3:19) और हेरोदियास की पुत्री, सलोमी का पिता था।

यह हमें हेरोदेस महान के पोते; अरखिलाउस, हेरोदेस अन्तिपास, हेरोदेस फिलिप्पुस द्वितीय, और हेरोदेस फिलिप्पुस प्रथम के भतीजे; अरिस्तोबुलुस (हेरोदेस महान का एक पुत्र जिसका उल्लेख शास्त्र में नहीं किया गया)[14] के पुत्र हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम से मिलाता है। हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम को केवल ''हेरोदेस'' कहा गया है और इसका उल्लेख केवल

प्रेरितों 12 में हुआ है। थोड़ी देर बाद, हम उसके जीवन को और निकटता से जांचेंगे; परन्तु पहले, आइए वचन में उल्लेखित हेरोदेस के परिवार के सदस्यों का अपना सर्वेक्षण शीघ्रता से पूरा कर लें। हेरोदेस प्रथम की हेरोदियास नामक एक बहन थी, जिसकी शादी (जैसा कि पहले टिप्पणी की गई थी) पहले एक चाचा के साथ और फिर दूसरे चाचा के साथ हुई। मत्ती 14:3, 6; मरकुस 6:17, 19, 22; और लूका 3:19 में उसका नाम दिया गया है। पहले चाचा, हेरोदेस फिलिप्पुस प्रथम से उसकी एक पुत्री (सलोमी) थी। सलोमी ने हेरोदियास के दूसरे पति, हेरोदेस अन्तिपास के लिए नृत्य किया, और फिर (अपनी मां के उकसाने पर) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर मांगा। मत्ती 14:6-11 और मरकुस 6:22-28 में उसकी इस पुत्री का उल्लेख है, परन्तु यहां इसका नाम नहीं दिया गया।

हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम के चार बच्चे थे, जिनमें से तीन अर्थात रोमी राज्यपाल, फेलिक्स की पत्नी, द्रुसिल्ला (24:24); हेरोदेस अग्रिप्पा द्वितीय (जिसे ''अग्रिप्पा'' कहा गया; 25:13-26:32); और बिरनीके (25:13) जिसके अपने भाई अग्रिप्पा के साथ अवैध सम्बन्धों ने मूर्तिपूजकों को भी चौंका दिया था, से हम प्रेरितों के काम के अपने अध्ययन में बाद में मिलेंगे।

नये नियम में इन हेरोदेसों का उल्लेख है। मैंने उनके अहम् के पागलपन तथा बदचलनी के बारे में विस्तार से बात नहीं की, परन्तु आशा है कि यह सुझाव देने के लिए काफ़ी कुछ कह दिया है कि यह एक ऐसा परिवार था जिसमें हर एक ने अपनी व्यक्तिगत लालसाओं को संतुष्ट करने के लिए अपनी योग्यताओं का इस्तेमाल किया। द *इन्टरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल इनसाइक्लोपीडिया* हेरोदेसों के विषय में कहता है:

> नाम हेरोदेस ... ''वीरता'' का प्रतीक है, जो सारे परिवार के लिए प्रासंगिक नहीं है, यह वीरता के बजाय चालाकी और दग़ाबाज़ी से परिवार के लिए लगा दिया गया था। ... हेरोदेस परिवार के इतिहास में महानता की इन बातों की कमी नहीं है, परन्तु जितनी भी ये बातें जिसमें थीं वे केवल उसी में ही मिलती थीं, जिन्हें असहनीय आत्मश्लाघा से कम कर दिया गया और परिवार की बदनामी हुई। हेरोदेस परिवार के कुछ राजकुमार निर्विवाद रूप से प्रतिभाशाली थे; परन्तु उन प्रतिभाओं के दुरुपयोग से इसराइल की कोई भलाई न हुई। ... पूरे परिवार का इतिहास निरन्तर झगड़े, संदेह, षड्यंत्र और चौंकाने वाली अनैतिकता से भरा है।

हेरोदेस की असफलताएं (12:1-3, 18-23)

हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम के जड़ तथा फल को ध्यान में रखते हुए आइए उसके व्यक्तिगत इतिहास की ओर लौटें।

हेरोदेस महान द्वारा मारे गए मरियम्ने के दो पुत्रों में से एक का नाम अरिस्तोबुलुस था। जिस समय अरिस्तोबुलुस की हत्या हुई, उसका चार साल का एक पुत्र था जिसका नाम हेरोदेस अग्रिप्पा था।[15] लड़के को बचाने के लिए, मरियम्ने ने उसे रोम भेज दिया जहां

वह शाही महल में पला-बढ़ा। शाही परिवार में उसके मित्रों में कलाउदियुस और कायुस कलीगुला थे। जब कलीगुला सिंहासन पर बैठा, तो उसने हेरोदेस अग्रिप्पा को अपने चाचा हेरोदेस फिलिप्पुस द्वितीय की गद्दी दे दी, जिसकी तीन वर्ष पूर्व मृत्यु हो गई थी। जब उसके चाचा हेरोदेस अन्तिपास को देश निकाला दिया गया, तो कलीगुला ने हेरोदेस अग्रिप्पा को अपना इलाका भी दे दिया। जब कलीगुला की हत्या हुई और कलादियुस सिंहासन पर बैठा, तो नये सम्राट ने हेरोदेस अग्रिप्पा को यहूदिया, सामरिया, और एदुमिया का नियन्त्रण दे दिया, जिन पर राज्यपालों का शासन होता था। इस प्रकार हेरोदेस अग्रिप्पा ने हेरोदेस महान के सारे इलाके पर फिर से दावा कर दिया। ''सुलैमान राजा के बाद किसी भी यहूदी राजा से अधिक इलाके पर उसका नियन्त्रण था।''

रोम में कब्जा करने के बाद, यहूदियों का यह पहला शासक था जिसकी नसों में यहूदी लहू था।[16] अपने व्यक्तिगत जीवन में, हेरोदेस अग्रिप्पा रोम की ज़्यादतियों में सहभागी रहा, परन्तु सार्वजनिक तौर पर वह यहूदी शैली तथा यहूदी संस्कारों के अनुसार चलता था। क्योंकि यह राजनीतिक रूप से उचित था, इसलिए उसने यहूदियों के साथ चलाकी से व्यवहार किया और रोम और यहूदियों के बीच अशान्त अस्थाई शान्ति सन्धि करवाते हुए उनकी बात रखी। फलस्तीन में उसे ''वर्ष का नागरिक'' पुरस्कार नहीं मिला होगा, परन्तु वह अपने से पहले किसी भी हेरोदेस से अधिक प्रसिद्ध था। कलीसिया के विरुद्ध फिर से सताव आरम्भ करना यहूदियों का समर्थन पाने के लिए बनाए उसके कार्यक्रम की एकमात्र योजना थी।

अध्याय 12 में बताई गई घटनाओं के समय, हेरोदेस अग्रिप्पा के पास पूरी शक्ति तथा पराक्रम था। अध्याय के अन्त में, हम उसे इच्छापूर्वक स्वयं को ''देवता'' कहलाने को तैयार देखेंगे, परन्तु इस अध्याय में उसके कार्य बताते हैं कि भीड़ द्वारा उसको यह नाम देने से बहुत पहले ही वह यह मानने को तैयार था कि वह परमेश्वर है। प्रेरितों 12 में उसे तीन दृश्यों में चित्रित किया गया है; हर एक में, वह उस मनुष्य के रूप में आता है ''जिसे लगता था कि वह परमेश्वर है।''

पहले दृश्य में (जिसका अध्ययन हमने पिछले पाठ में किया), हेरोदेस ने यहूदियों को प्रसन्न करने के लिए याकूब की हत्या तथा पतरस की गिरफ्तारी के आदेश दिए थे:

> उस समय हेरोदेस राजा ने कलीसिया के कई एक व्यक्तियों को दुख देने के लिए उन पर हाथ डाले। उस ने यूहन्ना के भाई याकूब को तलवार से मरवा डाला। और जब उस ने देखा, कि यहूदी लोग इस से आनन्दित होते हैं, तो उस ने पतरस को भी पकड़ लिया ... (आयतें 1-3)।

इस बात का कोई संकेत नहीं मिलता है कि हेरोदेस ने ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसके मन में मसीहियों के प्रति शत्रुता थी या यहूदी धर्म की रक्षा के लिए उसकी कोई धार्मिक भावना थी। उसने यह केवल राजनीतिक स्वार्थ के लिए किया। वास्तव में, यीशु और उसके

अनुयायियों के साथ हेरोदेस के परिवार के लम्बे सम्बन्ध के बारे में, हमें ध्यान देना चाहिए कि आम तौर पर यीशु से जुड़े लोगों के साथ हेरोदेस के दुर्व्यवहार का व्यक्तिगत तौर पर कुछ भी लेना-देना नहीं था।[17] मसीहियत को मिटाने की हेरोदेसों की कोई इच्छा नहीं थी; उनकी तीव्र इच्छा केवल अपने आप को ऊंचा करने की थी। उनके अत्याचार केवल उन्हीं को लाभ पहुंचाने के लिए थे। प्रेरितों को सताने के अपने कार्यों से, हेरोदेस कह रहा था, ''मैं परमेश्वर हूं; इसलिए, मैं *सर्वशक्तिमान* हूं।[18] मैं जो चाहूं कर सकता हूं!''

प्रेरितों 12 में हेरोदेस को दिखाने वाला दूसरा दृश्य पतरस के चमत्कारी ढंग से कैद से छूटने के बाद आता है। ''भोर को सिपाहियों में बड़ी हलचल होने लगी, कि पतरस का क्या हुआ'' (आयत 18)। इसमें कोई संदेह नहीं कि सिपाहियों के परेशान होने का एक कारण यह भय था कि यह पता चलने पर कि पतरस उसके हाथों से निकल गया है, हेरोदेस क्या करेगा।

पतरस को ढूंढ़ने के लिए-जेल में, सारे शहर में, देहात में बड़े पैमाने पर अभियान चलाया गया।[19] ''जब हेरोदेस ने उसकी खोज की, और न पाया; तो पहरुओं की जांच ...'' की (आयत 19क)। हेरोदेस की दिलचस्पी पतरस को ढूंढ़ने में नहीं, बल्कि उसकी अपनी प्रतिष्ठा में होगी। यह सुनिश्चित करने के लिए कि पतरस बच कर निकलने न पाए सारी सावधानी बरतने के बावजूद, हेरोदेस अग्रिप्पा की मूर्खता दिखाई दी और कोई हेरोदेस यह सहन नहीं कर सकता था। वह यह विश्वास करने में अक्षम था कि पतरस का बच कर निकलना उसकी गलती हो सकती है। यदि यह उसकी गलती नहीं थी, तो पहरेदारों की ही होगी।

''पहरुओं की जांच'' के शब्दों के निहितार्थ का विचार हमें कम्पकम्पी लगा देता है।[20]

हताशा में हेरोदेस ने बलि के बकरे की खोज करने पर उसे ढूंढ़ने वाले पहरुओं को, निर्दयतापूर्वक यातना दी होगी। परन्तु, पहरुओं को जीवन-मरण से कितना भी संघर्ष करना पड़ा हो, वे केवल उसी की जानकारी दे सकते थे जो उनके परिप्रेक्ष्य से हुआ था। मैं उन्हें कुचले हुए और लहूलुहान, सिर हिलाते हुए, टूटे दांतों के बीच से यह कहते देख सकता हूं: ''हम केवल इतना ही जानते हैं कि जब सुबह हुई, तो पतरस वहां नहीं था।''

हेरोदेस के पास दो विकल्प थे : वह यह मान लेता कि उसके चुनिन्दा सभी पहरेदारों ने मिलकर पतरस को बचाने का षड्यन्त्र रचा था या वहां कोई आश्चर्यकर्म हुआ था। पहले वाली सम्भावना पर विश्वास करना मुमकिन नहीं था। सब पहरेदारों का एक ही षड्यन्त्र में लिप्त होना, विशेषकर जब यह माना जाता हो कि षड्यन्त्र रचने की सजा मृत्यु होगी किसी भी प्रकार से मानने योग्य नहीं था। दूसरी ओर, हेरोदेस के लिए दूसरी सम्भावना (कि वहां आश्चर्यकर्म हुआ था) सोचना भी कठिन था। इसका अर्थ यह होना था कि संसार में उससे महत्वपूर्ण भी कोई है, और उसे मसीहियत के दावों पर गम्भीरतापूर्ण विचार करना चाहिए।

हेरोदेस ने अचिन्तनीय के बजाय अविश्वसनीय को चुना। उसकी आधिकारिक स्थिति यह थी कि पतरस के बच निकलने के लिए पहरेदार ज़िम्मेदार थे। (मैं कल्पना करता हूं कि वह सोच रहा था, ''आजकल *किसी पर* भी भरोसा नहीं किया जा सकता!'') रोमी

कानून के अनुसार, एक पहरेदार जो किसी कैदी को बचाता है उसे उस कैदी को मिलने वाला दण्ड दिया जाता था, परन्तु हेरोदेस चाहता तो उस पर दया की जा सकती थी। परन्तु, वह नहीं चाहता था कि पहरेदारों की लापरवाही की कहानी लोगों में फैल जाए, सो उसने ''आज्ञा दी कि वे (पहरेदार) मार डाले जाएं'' (आयत 19ख)। अपने पूर्वजों की भांति, उसने अपने घमण्ड की रक्षा के लिए यह बिल्कुल परवाह नहीं की कि कितने निर्दोष[21] मारे जाते हैं।

लूका ने लिखा कि प्राणदण्ड देने के बाद हेरोदेस ''यहूदिया को छोड़कर कैसरिया में जाकर रहा'' (आयत 19ग)। हाकिम के लिए पर्व पर यरूशलेम में आना और फिर पर्व खत्म होने पर कैसरिया में अपने महल में लौट जाना तय था, परन्तु लूका के शब्दों से यह अर्थ निकलता है कि राजधानी में हेरोदेस के जल्दी लौटने के निर्णय में कुछ और ही बात थी। शायद हेरोदेस ने यरूशलेम में और अधिक समय रहकर एक-एक करके प्रेरितों की हत्या करवाने की योजना बनाई थी, परन्तु पहरेदारों को उसके अत्याचारी प्राणदण्ड ने इतना अलोकप्रिय बना दिया कि उसे लगा कि कुछ देर के लिए यरूशलेम से दूर रहना ही उचित है।

आम जनता की प्रतिक्रिया जो भी हो, हेरोदेस का यह मानना था कि उसका निर्णय सही था। पतरस के बच निकलने की बात को हाथ में लेकर अपने कामों से, हेरोदेस ने कहा, ''मैं परमेश्वर हूं; इसलिए मैं *सर्वज्ञ* हूं।[22] मुझे गलती नहीं लग सकती!''

प्रेरितों 12 का अन्तिम दृश्य हेरोदेस के जीवन का भी अन्तिम दृश्य है। हेरोदेस का घमण्ड भरा हृदय सभी पाठकों के देखने के लिए खुला हुआ है। प्रेरितों 12 में दो मुख्य संदेश हैं। पहला (जैसा कि हमने पिछले पाठ में देखा था) यह है कि परमेश्वर उनके साथ है जो उसकी इच्छा पूरी करते हैं। दूसरे का स्पष्ट रूप से 20 से 23 आयतों में वर्णन किया गया है: परमेश्वर उनके विरुद्ध है जो उसका विरोध करते हैं। आइए इस चेतावनी को अपने पाठ के ऊपर चिपका लें: ''अपने आपको परमेश्वर समझने वाले सावधान रहें!''

आयत आरम्भ होती है, ''और वह [हेरोदेस] सूर और सैदा के लोगों से बहुत अप्रसन्न था'' (आयत 20क)। सूर और सैदा फीनीके के प्रमुख नगर थे, जो फलस्तीन के उत्तर की ओर थे।[23] हमें यह नहीं बताया गया कि हेरोदेस उनसे नाराज़ क्यों था; क्योंकि फलस्तीन तथा फीनीके व्यापार के उसी मार्ग में थे और शायद हेरोदेस को लगा कि सूर और सैदा अनुचित व्यवसाय में लगे हुए हैं।

आयत 20 ध्यान दिलाती है कि ''राजा के देश से उन के देश (फीनीके) का पालन पोषण होता था।'' फीनीके में कुछ अनाज की उपज होती थी, परन्तु वह पूरे देश के लोगों के भोजन के लिए पर्याप्त नहीं था; अनाज तथा अन्य कृषि उत्पादन के मुख्य स्रोत के लिए यहां के लोग फलस्तीन पर निर्भर थे।[24] फीनीके में मिसर की वस्तुएं दूरस्थ देश होने के कारण अधिक महंगी होती थीं। हेरोदेस के साथ मेल रखना उनके हित में था। इसलिए, हम पढ़ते हैं, ''सो वे [फीनीके से आए दूत] एक चित्त होकर उसके [हेरोदेस के] पास आए और बलास्तुस को, जो राजा का एक कर्मचारी था, मनाकर मेल करना चाहा'' (आयत 20ख)। उन्होंने सम्भवत: अपनी बात सुनाने के लिए हेरोदेस को राज़ी करने के उद्देश्य से

बलास्तुस को *घूस* देकर ''मना लिया।'' ''कर्मचारी'' विशेषकर उसके लिए कहा गया है जो राजा के महल का अधिकारी था, परन्तु वह राजा की व्यक्तिगत तौर पर ही सेवा करता था। कर्मचारी के लिए मॅकार्ड के अनुवाद में ''राजा का खानसामा'' है। NIV में ''राजा का भरोसेमंद निजी सेवक'' है।

सुनवाई के लिए एक दिन ठहराया गया था।[25] इतिहासकार जोसेफ़स ने इस अवसर का विस्तार से विवरण दिया है। उसने टिप्पणी की कि वह दिन कलौदियुस कैसर के सम्मान में विशेष जश्न का एक भाग था। ''और ठहराए हुए दिन हेरोदेस राजवस्त्र पहिनकर सिंहासन पर बैठा; और उन को व्याख्यान देने लगा'' (आयत 21)। जोसेफस ने हेरोदेस के ''राजवस्त्र'' का इन शब्दों में वर्णन किया है:

> दूसरे दिन उसने (अग्रिप्पा ने) बड़ी ही कीमती चांदी से बने हुए वस्त्र पहने जो कि बहुत अद्‌भुत और वैभवशाली थे तथा सुबह होते ही वह रंगशाला में आया। इस समय सूर्य की किरणों से उसके चांदी के वस्त्र जगमगा रहे थे तथा उनकी तेज चमक को देखकर लोगों पर भय छा गया था।

लोग पुकार उठे, ''यह तो मनुष्य का नहीं परमेश्वर का शब्द है!'' (आयत 22)। जोसेफ़स कहता है ''उसके चापलूस पुकार उठे, कोई यहां से, और कोई वहां से, ... कि वह तो देवता है।'' सूर और सैदा के लोग (और दूसरे जो विशेष सहानुभूति चाहते थे) जयकारे लगा रहे थे।

हेरोदेस को ''परमेश्वर'' कहकर, मृत्यु से उनका बचाव हो जाना चाहिए था। जब कुरनेलियुस पतरस के पांवों में गिरा था, तो प्रेरित ने जल्दी से उस सूबेदार को उठाकर कहा था, ''खड़ा हो, मैं भी तो मनुष्य हूं'' (10:26)। बाद में हम देखेंगे कि लुस्त्रा के लोग पौलुस और बरनबास के लिए कह रहे थे, ''देवता मनुष्यों के रूप में होकर हमारे पास उतर आए हैं'' और इन मिशनरियों ने स्तब्ध होकर अपने कपड़े फाड़ डाले थे (14:11, 14)। परन्तु, हेरोदेस अग्रिप्पा, लोगों से उससे भी बड़ा पद स्वीकार करने का इच्छुक था। जोसेफ़स कहता कि हेरोदेस ने ''न उन्हें झिड़का, न ही उनकी अपवित्र चापलूसी को नकारा।'' जोनाथन स्विफ्ट ने चापलूसी को ''मूर्खों का भोजन'' कहा है। रंगशाला में शोर-शराबे के साथ हेरोदेस ने समारोहपूर्वक भोजन किया।[26] अपने कार्यों से, उसने कहा, ''मैं परमेश्वर हूं! इसलिए मैं *ईश्वरीय* हूं; लोग मेरी जितनी भी खुशामद करें मैं उसके योग्य हूं!''

यहोवा का विचार कुछ और ही था। यशायाह के द्वारा, उसने कहा था, ''मैं यहोवा हूं, मेरा नाम यही है; अपनी महिमा मैं दूसरे को न दूंगा'' (यशायाह 42:8)। परमेश्वर के विषय में इस नबी ने कहा, ''जो बड़े-बड़े हाकिमों को तुच्छ कर देता है'' (यशायाह 40:23)। इसलिए, आयत 23 पढ़ने पर, हमें आश्चर्य नहीं होता: ''उसी क्षण प्रभु के एक स्वर्गदूत ने[27] तुरन्त उसे मारा,[28] क्योंकि उसने परमेश्वर की महिमा न की और वह कीड़े पड़के मर गया'' (12:23)। जोसेफ़स ने उनके दृष्टिकोण से जो उसके निकट थे हेरोदेस

की विपदा का वर्णन इस प्रकार से किया है:

> उसके पेट में ज़ोरदार और बड़ी बुरी तरह से दर्द उठा ...। इसलिए उसे महल में ले जाया गया; ... और जब अपने पेट की पीड़ा से, जो पांच दिन तक रही, उसे राहत मिली, तो अपनी आयु के 54वें वर्ष में, और अपने शासन के सातवें वर्ष में; ... वह इस जीवन से कूच कर गया।

हेरोदेस की बीमारी के बारे में छिद्री आन्त्रशोथ से लेकर आंतड़ियों के भयंकर अवरोध होने तक बहुत से अनुमान लगाए गए हैं। वाक्यांश ''कीड़े पड़के मर गया'' का अर्थ अक्षरश: हो सकता है; उन दिनों आंतड़ियों के परजीवियों की भरमार थी।[29] यदि हेरोदेस को कोई और भी रोग था, तो कीड़ों की उपस्थिति से उसकी हालत और भी जटिल हो गई थी। दूसरी ओर, क्योंकि अन्त तक कीड़ों द्वारा खाए जाने की बात सामान्यत: शास्त्र में प्रभु की ओर से दिए जाने वाले दण्ड के साथ जुड़ी होती है (जैसे नरक में; मरकुस 9:48), इसलिए इस वाक्यांश का अर्थ यही हो सकता है कि हेरोदेस की बीमारी ईश्वरीय प्रतिशोध के रूप में थी।

हेरोदेस की भयानक मृत्यु को दर्ज करने के बाद, लूका ने कहा, ''परन्तु परमेश्वर का वचन बढ़ता और फैलता गया'' (आयत 24)।[30] पहली सदी में समाचार पत्र होते, तो हेरोदेस की मृत्यु प्रथम पृष्ठ पर छपने वाला समाचार होता, जबकि वचन के बढ़ने की बात अन्दर के किसी पृष्ठ में छिपी होती। परन्तु, परमेश्वर के दृष्टिकोण से, कहानी का अभिप्राय यह है कि परमेश्वर का वचन अब निर्विरोध सुनाया जाने लगा था। ''परन्तु'' शब्द में विषमता दिखाई देती है: राजा हेरोदेस गिर गया, *परन्तु* प्रभु का वचन फैलने लगा। हेरोदेस ने सोचा था कि वह कलीसिया का नाश कर देगा, परन्तु उसके विपरीत उसी का नाश हो गया।

जोसेफ़स ने इस राजा की मृत्यु की तिथि 44 ई. बताई है।[31] वचन को स्वतन्त्र रूप से फैलने देने के बाद, हेरोदेस की मृत्यु के बारे में और बातें प्रसिद्ध हुईं। उसकी मृत्यु ने हेरोदेसों के शासन के अन्त की शुरुआत को चिह्नित कर दिया। हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम की मृत्यु से यहूदिया पर फिर से राज्यपाल शासन करने लगे।[32] जब हम अध्याय 26 में राजा अग्रिप्पा (हेरोदेस अग्रिप्पा द्वितीय) से मिलेंगे, तो उसका शासन गलील सागर के उत्तर-पूर्व में एक छोटे से इलाके पर होगा।

हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम की मृत्यु ने यहूदियों के अन्त के आरम्भ को भी चिह्नित कर दिया। हेरोदेस की मृत्यु के सम्बन्ध में *इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका* में लिखा है: ''उसकी अकस्मात मृत्यु... यहूदी लोगों के लिए एक संकट था,... क्योंकि अपने सभी दोषों के रहते... उसने सफलतापूर्वक रोम तथा यहूदियों में संतुलन बनाए रखा था और दिखाया था कि एक दूसरे के लाभ के लिए वे दोनों साथ-साथ रह सकते थे।'' बर्टन कॉफ़मैन ने यह जोड़ते हुए टिप्पणी की कि ''जब परमेश्वर ने अपने स्वर्गदूत को हेरोदेस अग्रिप्पा का नाश करने के लिए भेजा तो उसका अन्तिम परिणाम लगभग 20 वर्ष बाद महसूस किया गया

जब तीतुस और वेस्पैनियन ने यरूशलेम को नाश किया,'' यह एक ऐसे आदमी का हटाया जाना था जिसने यहूदियों की रोमियों से सहिष्णुता को बनाए रखा।

हेरोदेस के साथ अपने व्यवहार में, परमेश्वर ने स्पष्ट शब्दों में यह घोषणा कर दी कि उसका कोई प्रतिद्वन्द्वी नहीं हो सकता! यह संसार परमेश्वर के सिंहासन से चलाया जाता है, तानाशाहों के सिंहासनों से नहीं। यीशु ने कहा, ''क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और *केवल उसी की* उपासना कर'' (मत्ती 4:10)।

हेरोदेस के अनुयायी

हम यह बताए बिना अध्ययन समाप्त नहीं करना चाहेंगे कि केवल हेरोदेस ही नहीं था जिसने अपने आप को ''परमेश्वर'' के रूप में प्रचारित करना चाहा था। वर्षों से हेरोदेस के कई अनुयायी रहे हैं।

ऐसी बात कहकर हम दूसरों के बारे में बात कर समय बिताने को लालायित हो उठते हैं। उदाहरण के लिए, ऐसे लोग भी हुए हैं जो मूलत: अपने आप को देवता मानते थे और उनकी उपासना की जाती थी जैसे फिरौन, कैसर, तथा अन्य लोग। पहले एक पाठ में, हमने कूशियों की रानी, कंदाके के बारे में पढ़ा था (8:27); उसके पति को इथियोपिया के लोग देवता मानते थे। फिर कुछ ऐसे लोग हैं जिनकी उनके अनुयायी मूर्तियां बनाकर पूजा करते हैं। कई बार हम ''मूर्तियां'' शब्द को फिल्मी सितारों की बात करते हुए इस्तेमाल करते हैं: ''नवयुवक मूर्तियां,'' ''फिल्मी मूर्तियां,'' आदि (मैं नहीं जानता कि उन ''मूर्तियों'' को कैसे लगता है, परन्तु मेरे लिए यह घबरा देने वाली बात है!) हम उनकी भी बात कर सकते हैं जिनका हर विचार, बात और काम अपने इर्द-गिर्द ही घूमता है। उन आराधना और सेवा करने वालों के लिए रोमियों 1:25 कहता है, ''उन्होंने... सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है''; अन्य शब्दों में वे अपने आप को अपना ईश्वर बनाते हैं। यकीनन ही, हेरोदेस इस बात का दोषी था। पुन:, मैं कहता हूं हमारे लिए ऐसा विचार मन में लाना बहुत बड़ी परीक्षा होगी।

मैं दोबारा अपने पाठ को देखता हूं। आयतें 22 और 23 टिप्पणी करती हैं कि भीड़ के पुकारने के बाद कि ''यह तो मनुष्य का नहीं परमेश्वर का शब्द है!'' ''उसी क्षण प्रभु के एक स्वर्गदूत ने उसे [हेरोदेस को] मारा, *क्योंकि उसने परमेश्वर की महिमा न की।*'' हेरोदेस का स्पष्ट पाप यह था कि, नबूकदनेस्सर की तरह उसने जो कुछ किया उसके लिए परमेश्वर को महिमा देने के बजाय उसका श्रेय स्वयं ही ले लिया। वाक्यांश ''परमेश्वर की महिमा न की'' उन अन्य प्रासंगिकताओं के बजाय अधिक निकटता से प्रहार करता है जो हमने दी हैं।

क्या हम हमेशा परमेश्वर को महिमा देते हैं? परमेश्वर ने हमें समय, योग्यताएं, व्यक्तित्व, अवसर उपलब्ध करवाकर और कई प्रकार से आशिषें दी हैं। जब हम कोई काम करते हैं, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, और उसके लिए कोई हमारी प्रशंसा

करे, तो क्या हम उसका श्रेय परमेश्वर को देते हैं? कितनी बार हमने वे इंटरव्यू सुने हैं जिनमें सफल लोग अपने प्रयास तथा बलिदान के वर्षों की बात करते हैं? सच्चाई तो यह है कि दूसरों ने इतना कठिन परिश्रम किया और इतना बलिदान किया, लेकिन उनको उसके अनुसार फल नहीं मिले। जो सफल हुए, उन्हें *परमेश्वर* ने कुछ बढ़कर दिया और उन्हें इसे पहचानना चाहिए और उसे महिमा देनी चाहिए!

प्राचीन काल में, दाऊद ने कहा, ''हे प्रभु हे मेरे परमेश्वर मैं अपने सम्पूर्ण मन से तेरा धन्यवाद करूंगा, और तेरे नाम की महिमा सदा करता रहूंगा'' (भजन संहिता 86:12)। प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक में, हमने देखा कि लोगों को वही आत्मा पहनाया गया। लंगड़े भिखारी को चंगा करने की ''जो घटना हुई थी उसके कारण सब लोग परमेश्वर की बड़ाई करते थे'' (4:21)। पतरस द्वारा यरूशलेम में मसीहियों को यह बताने के बाद कि कैसरिया में क्या हुआ, उन्होंने ''परमेश्वर की बड़ाई'' की क्योंकि उसने ''अन्यजातियों को भी जीवन के लिए मन फिराव का दान दिया'' था (11:18)। पौलुस की मिशनरी यात्राओं पर अध्ययन आरम्भ करते समय हम देखेंगे कि जब वह यात्रा से लौटा और उसने कलीसिया को अन्ताकिया के बारे में बताया तो उसने यह नहीं कहा कि उसने और उसके साथियों ने क्या किया था, बल्कि यह बताया ''कि *परमेश्वर ने* हमारे साथ होकर कैसे बड़े-बड़े काम किए'' (14:27)।

एक बार, एक बहुत पुराने ऐल्डर व प्रचारक को सम्मानित किया जा रहा था। शाबाशियां सुनने के बाद, वह मुस्कुराता हुआ उठा और कहने लगा, ''यदि आप एक कछुए को बाड़े पर देखें, तो एक बात से आप सुनिश्चित हो सकते हैं कि वहां वह अपने आप नहीं पहुंचा!'' फिर उसने उनका धन्यवाद किया जिन्होंने उसकी सहायता की थी, अन्त में जो कुछ भी उसने पाया उसके लिए परमेश्वर को श्रेय दिया। हम सभी बाड़ों पर बैठे कछुए हैं; हम वहां अपने आप नहीं पहुंचे! परमेश्वर हम सब की सहायता करे कि हम उसे वह महिमा दें जिसके वह योग्य है।

सारांश

हेरोदेस का जीवन तथा मृत्यु आत्म-केन्द्रित जीवन के ख़तरों पर एक सजीव पाठ है। आज हम कभी-कभी ''शान से मरने'' की बात करते हैं। कई बार ''शान से मरना'' कहने से हमारा अभिप्राय होता है डॉक्टरों द्वारा मृत घोषित करने के बाद मनुष्य द्वारा जीवित रखने की मशीनों अर्थात (लाइफ स्पोर्ट सिस्टम) के बिना किसी व्यक्ति का मरने का अधिकार। परन्तु शान से मरने वाली बात का डॉक्टरों से अथवा मशीनों से कोई सम्बन्ध नहीं है।[33] मुझे विश्वास है कि हेरोदेस के पास अच्छे से अच्छे डॉक्टर होंगे जो कि पैसा देकर बुलाए जा सकते थे, फिर भी ऐसे थोड़े लोग ही हैं जो उससे कम शान से मरते हैं। शान से मरना या कम शान से मरना इस बात पर निर्भर नहीं करता कि जीवित रखने वाली मशीन को कब बन्द कर दिया जाए, बल्कि इस बात पर निर्भर करता है कि अपनी बीमारी से पहले उसने किस प्रकार का जीवन बिताया था। यदि आप शान से जीते हैं तो शान से मरेंगे भी।

मैंने कैंसर से पीड़ित लोगों को देखा है, कैंसर उनके शरीरों को खा रहा था, फिर भी मृत्यु के समय उनके होंठों पर दृढ़विश्वास था। और उनकी आंखों में एक आशा दिखाई देती थी। यह वास्तव में सच्चे गौरव से भरी मृत्यु है।

क्या मैं मरने के लिए तैयार हूं? क्या आप तैयार हैं? जब तक हम अपने जीवन प्रभु को नहीं सौंपते, हम मरने के लिए तैयार नहीं हैं।

पाद टिप्पणियां

[1]इस प्रकार के लक्षण लिकैंथ्रोपी तथा बोनथ्रोपी रोगों में पाए जाते हैं। रोग कोई भी हो राजा पर यह ईश्वरीय दण्ड के रूप में आया था (दानिय्येल 4:25)। [2]अन्य शब्दों में, उन्होंने अपने आप को मनुष्यों अथवा परमेश्वर के नियमों से ऊपर समझा। उन्होंने केवल अपनी और अपनी इच्छाओं की ''उपासना की।'' [3]पृष्ठ 180 पर ''हेरोदेस का परिवार'' पर चार्ट देखिए। [4]नये नियम में इदोम की भूमि को यूनानी नाम ''इदूमिया'' (मरकुस 3:8) और उसके निवासियों को ''इदूमी'' कहा गया है। [5]इस अद्‌भुत याजकाई परिवार को असमोनियंस अथवा हसमोनियंस के रूप में भी जाना जाता है। [6]''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 156 पर कैसरिया पर नोट्स देखें। [7]पुनर्निर्माण 19 ईस्वी में आरम्भ हुआ और हेरोदेस की मृत्यु के 68 वर्ष बाद तक पूरा नहीं हुआ। [8]उसके बहुत से राजनीतिक शत्रु थे, इसलिए उसका कुछ भय सही था। [9]जातियों के राजा को भी हाकिम माना जाता था; इस कारण हेरोदेस अन्तिपास को मरकुस 6:14 में ''हेरोदेस राजा'' कहा गया है। [10]हेरोदियास अरिस्तोबुलुस की पुत्री और हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम की बहन थी।

[11]निकाली गई पत्नी एक अरबी राजा, अरितास की पुत्री थी। ''प्रेरितों के काम, भाग-2'' के पृष्ठ 130 पर शाऊल के दमिश्क से बच निकलने (प्रेरितों 9:23-25) पर नोट्स देखिए। [12]ये क्षेत्र गलील सागर के उत्तर तथा पूर्व की ओर थे। [13]हेरोदेसों को लोकप्रिय बनाने के सम्बन्ध में वह एक अपवाद था। उसे नाम स्पष्टत: पिता के बजाय माता से मिला। [14]अरिस्तोबुलुस जो हेरोदेस अग्रिप्पा प्रथम का पिता था, का नाम शास्त्र में नहीं है, परन्तु रोमियों 16:10 में एक और अरिस्तोबुलुस है। बहुत से लोगों का मानना है कि रोमियों 16:10 वाला अरिस्तोबुलुस हेरोदेस महान का पोता था। यदि ऐसा है, तो नये नियम में उल्लेखित हेरोदेस के परिवार का यह बारहवां सदस्य है। रोमियों 16:10 यह नहीं कहता कि यह अरिस्तोबुलुस एक मसीही था, परन्तु स्पष्टत: उसके घर के कुछ लोग मसीही थे। सम्भवत: हेरोदियोन नाम का एक दास था (रोमियों 16:11); ''इयोन'' के साथ समाप्त होना यह संकेत देता है कि हेरोदियोन का सम्बन्ध हेरोदेसों में से एक के साथ था। [15]वह औगस्तुस कैसर के प्रसिद्ध मंत्री, अग्रिप्पा का एक नाम था। [16]हेरोदेस में यहूदी खून अपनी दादी, मरियम्ने से आया। [17]एक उल्लेखनीय अपवाद के कारण मैं ''साधारणतया'' शब्द का इस्तेमाल करता हूं: यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के विरुद्ध हेरोदियास का व्यक्तिगत रोष था। [18]''सर्वशक्तिमान'' का अर्थ है ''सर्वशक्ति सम्पन्न।'' [19]यह निहित है। [20]यूनानी शब्द के अनुवाद ''जांच'' का अर्थ है ''अच्छी तरह छान-बीन करने के लिए, ऊपर-नीचे छानना।''

[21]हम ठीक-ठीक नहीं जानते कि हेरोदेस ने कितने पहरुओं की हत्या की। पतरस के बच निकलने के समय पहरे पर लगे हुए पहरुए तो निश्चय ही कत्ल कर दिए गए। शायद दूसरों अर्थात उनका जो पतरस और/या दूसरों के लिए साधारण कारावास के पहरे पर थे, भी यही हाल हुआ था। [22]''सर्वज्ञ'' का अर्थ है ''सब कुछ जानने वाला।'' [23]11:19 पर नोट्स देखिए। [24]देखिए 1 राजा 5:9-12; एज्रा 3:7. [25]यदि कोई समझौता हो चुका था, जैसा कि वैस्टर्न टैक्सट से संकेत मिलता है, तो इसकी घोषणा का समय तय था। [26]चापलूसी के ख़तरे पर, देखिए भजन संहिता 12:2-4; नीतिवचन 26:28. [27]ऐसा कोई संकेत नहीं है कि स्वर्गदूत दृश्यमान था। [28]आयत 23 में ''मारा'' शब्द उसी यूनानी शब्द से है जिसका अनुवाद आयत 9 में ''मार'' है। आयत 7 में यह एक आशीष है; जबकि आयत 23 में श्राप है। [29]लोग राउंडवर्म, टेपवर्म, हुकवर्म,

पिनवर्म इत्यादि कीड़ों के रोग से पीड़ित थे।[30]कलीसिया के विकास की बात करने का यह केवल दूसरा ढंग है। यह सम्भव है कि गैर-मसीहियों ने हेरोदेस की मृत्यु में परमेश्वर का हाथ देखा, और परिणाम-स्वरूप, वचन को सुनने के लिए तैयार हो गए।

[31]यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि इससे हमें प्रेरितों की पुस्तक में अन्य तिथियों पर विचार करने में सहायता मिलती है। [32]इन राज्यपालों में फेलिक्स तथा फेस्तुस भी हैं, जिन्हें हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में बाद में मिलेंगे।[33]नकली अंग लगाने के फैसलों में कठिनाई को मैं कम नहीं समझूंगा। परन्तु, मैं सुझाव दे रहा हूं, कि मरने के ढंग से बढ़कर यह बात अधिक महत्वपूर्ण है कि किसी का *जीवन* कैसा है।

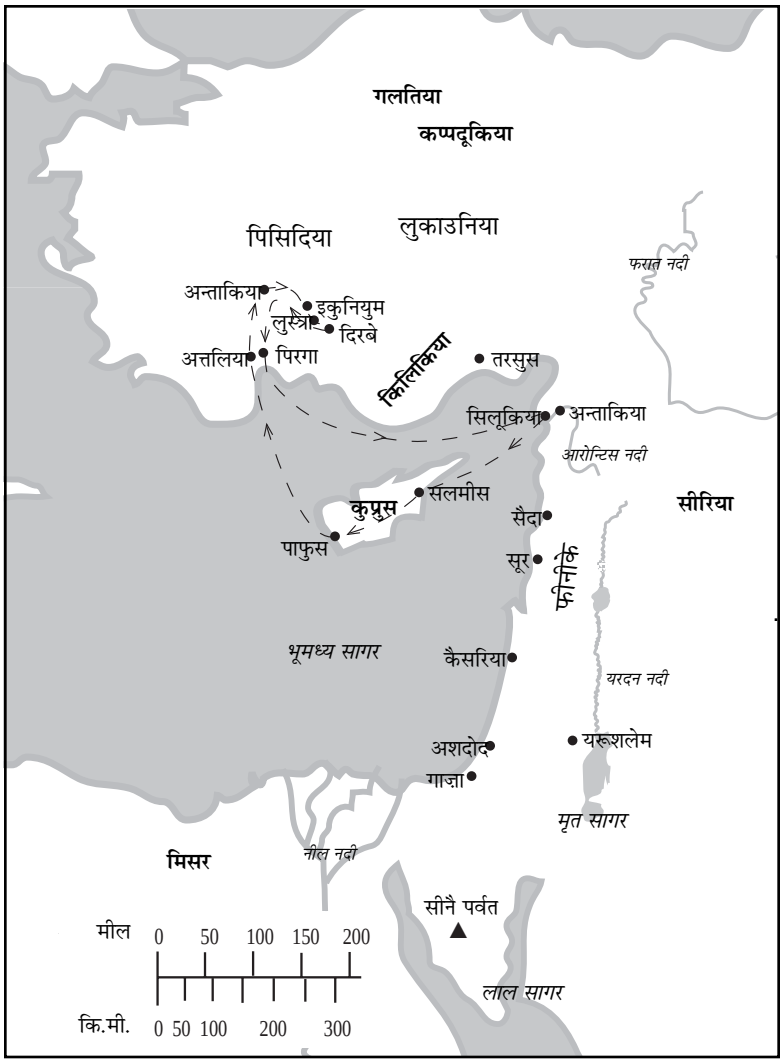

पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा